



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

ज्वार की नई किस्म विकसित, तमिलनाडु, महाराष्ट्र व कर्नाटक में भी बोई जाएगी

जारी रखा संवादतात, हिंसा : चौधरी चरण संह हरियाली कृषि विवि के अनुचित विज्ञानियों ने चार की नई व उन्नत किस्म सीएसवी 44 एक विकसित की है। चार की इस किस्म को विवि के अनुचितीयों एवं पौधे प्रजनन विभाग के चारा अनुभव द्वारा विकसित किया गया है। यह किस्म दक्षिणी राज्यों मुख्यतः कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए सिफारिश की गई है। नई किस्म को विवि के विभागों ने एचप्यू में ही विकसित किया है।

इस किस्म को केंद्र के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की फसल मानक एवं अनुमोदन केंद्रीय उप समिति द्वारा अधिकृत व जरीर किया गया है। बैठक के अधिक्षेत्र भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के फसल विज्ञान के उप महानिदेशक डा. टीआर शर्मा ने की थी।

ज्वार की नई इनत किस सीएसवी 44 एफ का फाइल फोटो। • विजयि

कृषि विश्वविद्यालय के इन विज्ञानियों की मेहनत राई रंग
 विश्वविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डा. एके छाबडा ने बताया कि सीरेसटी 44 एक किसी को विकसित करने में दस विभागों के बाहर अनुभाग के विज्ञानियों द्वारा, पर्मी युमारी, डा. सरवानी आर्यो, डा. एसके पाहुणा, डा. एके छाबडा एवं डा. एसके पाहुणा की टीम की मेहनत राई रंग ताई है। इन्हें अलंकार, विभाग, डा. योगी टोकार, डा. हरीचंद्र कुमार, डा. विनोद मलिक एवं डा. सरिया देवी का भी विशेष सहयोग रहा है।

सीएसी 44 एप में अन्य किस्मों से अधिक पिटास
 विश्वविद्यालय के अनु-संबंधन निदेशक डा. एसके फराहत ने बताया कि सीएसी 44 एप किस्म में अन्य किस्मों की तुलना में प्रोटीन और प्रोटीन-संतापनीति अधिक है, जिसकी काज से यह पशु के दूष उत्पादन में बढ़ोत्तरी करती है। इस किस्म में पिटास 10 फीस से भी अधिक व दूष उत्पादन के कारण पशु इनको खाना अधिक परद रखते हैं। इन किस्म में दूष वारे के लिए प्रसिद्ध किस्म सीएसी 21 एप से 7.5 फीस से वर्षा सीएसी 30 एप से 5.8 फीस तक होता है। ये पिटावर ऊपरी की अधिक मुकाबला होता है। शिकारिश किए गए उत्तरी खाद्य व सिराह्य प्रबन्धन और सारा रह किए गए प्रबन्धन देने में समर्पित है। अधिक वारिश व तजे जानवर चलने पर भी यह किस्म पर रहती नहीं है।

पत्तों पर नहीं लाते रोग
ज्वार में प्राकृतिक तौर पर पाया
जाने वाला विशेष तात धूरिन
इस किस्म में बहुत ही कम
है। सीधी तरफ़ किस्म
नाइट्रोकॉट की प्रति विरोधी
है व इसमें पत्तों पर लाने वाले
रोग भी नहीं दिखता। विज्ञानियों
के अनुसार चारा उत्पादन,
पौधिकता एवं रोग प्रतिरोधकता
की दृष्टि से यह जात किस्म
है। इस किस्म की हड्डी वारे की
ओसत पैदावार 17.5 विनेट
प्रति हेक्टेएक्टर है, जबकि ज्वार की
अन्य फैलतर किस्मों सीएसटी
21 एक और सीएसटी 30 एक
से क्रमशः 7.5 मित्राशत व 5.8
पीसट अधिक है। इस किस्म
की सुखे वारे की ओसत पैदावार
115 विनेट प्रति हेक्टेएक्टर है।

प्रदेश के लिए सिफारिश का भाँजेरो प्रोजेक्ट
 -नई किस्म की विकसित करने वाली टीम
 सदस्य अनुभवशक्ती एवं पैष प्रजनन
 विधायिका अनुभवशक्ती के अध्यक्ष डा.
 डीएस कॉमांडो ने बताया कि इस किस्म
 को एचएयू में अनुभवशक्ती विद्या यापा है,
 लेकिन कमटी द्वारा इकट्ठी ग्राहणावा व
 पैदावार को ध्यान में रखते हुए देश के
 दक्षिणी राज्यों (मिलिनांगा, कर्नाटक, और
 कर्नाटक) में हो रही की असैनिक देशवार के
 लिए सिफारिश किया गया। इस किस्म
 को प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में परीक्षण के
 तौर पर लगाया गया था, जहां इसके बहुत
 ही सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं।
 इसलिए यहां किसानों के लिए भी इसकी
 सिफारिश सर्वेत प्रोजेक्ट जरूर ही कमेटी
 को भेजा जाएगा। उठाने वाला काम कि जारा
 अनुभवशक्ती 1970 से अब तक जारी करु
 आठ किस्में विकसित कर चुका है। इनमें
 से बहुत कार्टाई वाली किस्म एस-एसी
 59-3 (1978), जो कार्टाई वाली किस्म
 एचरी 136 (1982) व पए कार्टाई वाली
 एचरी 308 (1996), एवजे
 513 (2010) और एचरी 541 (2014)
 किसानों की फैली प्रसंद बनी हैं।

अब तक जार की आठ किस्में विकासित कर चुका है परंपरा-कुलपति विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर शह ने कुछ विज्ञानियों को इस उपर्युक्त पर बधाई दी। साथ ही भविष्य में भी नियन्त्रण प्रयासों रखने का आपाना संकेत है। उन्हें बताया कि चारा अमावास के विज्ञानियों द्वारा विश्वविद्यालय की कामाना से लेकर एवं अब तक जार की आठ किस्में विकसित की जा चुकी हैं, जो अनेक आप में डीडी उपलब्ध है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... **दृष्टि भवान**
दिनांक 12-11-2020 पृष्ठ संख्या 9 कॉलम 2-3

वैज्ञानिकों न तैयार की किसम सीएसवी 44 एफ विकसित

हरयाणा कृषि विधायिकालय के कृषि वैज्ञानिकों ने ज्वर की नई व उन्नत किस्म सीएसवी 44 एक विकसित कर एक और उपवर्षिति को विश्वविद्यालय के नाम किया है। ज्वर की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौधे प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं संग्रहालय कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहबोग विभाग की फसल बाजार, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्र उप-समाप्ति द्वारा नई दिल्ली में आवृत्ति 84वां बैठक में अधिसूचित जा राजी कर दिया गया है। बैठक में अधिसूचित भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के फसल विभाग के उप-मन्त्रीरेशक डॉ. टी.आर. शर्मा ने की थी। ज्वर की यह किस्म विक्री गण्डी मध्यप्रदेश, बंगलादेश और ताइवान देशों

तमिलनाडू, महाराष्ट्र व कर्नाटक में भी बोई जाएगी हरियाणा
कृषि विश्वविद्यालय से विकसित की गई ज्वार की नई किस्म

वैज्ञानिकों ने कहा, स्वादिष्ट होने के कारण पश्चात् इसको खाना अधिक प्रसंद करते हैं।

विद्यालय अला विज्ञानों से 10 प्रतिशत तक अधिक

विश्वविद्यालय के अनुच्छेदिक निदेशक जी. एसके सरस्वत ने ज्ञाना कि
जीरंगवारी 44 एप्रिल किसमें अंतर्यामी किसमें को तुलना में प्रोटीन व पारानीशीलता
अधिक है, जिसकी वज़ह से पशु के द्वारा उत्पन्न में बढ़दारी करती है। इस
किस में भिन्नता 10 प्रतिशत से भी अधिक व स्वास्थ्य द्वारा दर्शायी जाती है कि करण पशु
इसको अधिक प्रतिशत करते हैं। इस किसमें में हरे गांव के लिए करण पशु
किसी जी दरवाजी 21 एफ से 7.5 प्रतिशत व. जी. एस.सी. 30 एफ से 5.8
प्रतिशत अधिक हरे गांव को बोवार होने के कारण किसी जी को अधिक
मुनाफा होता। सिराजित किस द्वारा उत्पन्न वाद के द्वारा इसकी प्रबलता के ऊपरार
यह सिराज अधिक प्रदाता बोने में सक्षम है औ यह दो तरफायी जीनों ने भी
उगाया जा सकता है। अधिक बारिश व तोज हवा बदले पर भी यह किसमें
विताना चाही है। ऊपर में प्रकृतात्मा तो पर पाया जाने वाला विषेषता तत्त्व
धूरिन है कि यह बहुत ही कम है। सीडीएस 44 एप्रिल किसमें अप्रैल की
कोट एवं प्रतिशतीयी है व वार्षा पर्याप्त एवं लोकों वाले गांव भी यहाँ लानी



हिसार। ज्यार की उन्नव किस्म विकसित करने वाली टीम सदस्य।

इन वैज्ञानिकों की मेहनत लाई रंग

विश्वविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एके छाबड़ा ने बताया कि सीएसवी 44 एक किस्म की विकसित करने में इस विभाग के चारा

अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. परमी कुमारी, डॉ. सत्यवान आर्य, डॉ. एसके पाहुजा, डॉ. एन.के. लक्ष्मण मत्त हैं द्वीपस मोबाइल की टीम की

मेहनत रंग लाई है। इसके अलावा डॉ. सतपाल, डॉ. जयंती टोकर, डॉ. हरीश कुमार, डॉ. विनोद मुखिया आदि हैं जिन्होंने देशी का

लिए सिफारिश की गई है। हालांकि इस किस्म को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एचएयू में ही विकसित किया है।

अब तक ज्वार की आठ किस्में विकसित : कुलपति: विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने बताया कि इससे पहले भी

विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों द्वारा विश्वविद्यालय की स्थापना से लेकर अब तक आठ क्रम में विकसित की जा चुकी हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

दिनांक ।२।।। २०२० पृष्ठ संख्या ।५ कॉलम ।५-८

दैनिक मासिक

रिसर्च • एचएयू के वैज्ञानिकों ने ज्वार की नई किस्म विकसित की ज्वार की नई किस्म सीएसवी 44 एफ, प्रोटीन व पाचनशीलता भी अधिक, मिठास 10% ज्यादा

भारत न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने ज्वार की नई व उत्तर किस्म सीएसवी 44 एफ विकसित कर एक और उपलब्धि को विश्वविद्यालय के नाम किया है। ज्वार की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है।

विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना' एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित 84वीं बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। बैठक की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के फसल विज्ञान के उप-महानिदेशक डॉ. टी.आर. शर्मा ने की थी। ज्वार की यह किस्म दक्षिणी राज्यों मुख्यतः कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए सिफारिश की गई है। हालांकि इस किस्म को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एचएयू में ही विकसित किया है।

पशु के दुग्ध उत्पादन में करती है बढ़ोतरी



ज्वार की नई किस्म विकसित करने वाले वैज्ञानिक कुलपति प्रो समर सिंह के साथ।

विवि के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि सीएसवी 44 एफ किस्म में अन्य किस्मों की तुलना में प्रोटीन व पाचनशीलता अधिक है, जिसकी वजह से पशु के दुग्ध उत्पादन में बढ़ोतरी करती है। इस किस्म में मिठास 10 प्रतिशत से भी अधिक व स्वादिष्ट होने के कारण पशु इसको खाना अधिक पसंद करते हैं। इस किस्म में हरे चारों के लिए प्रसिद्ध किस्म सी.एस.वी. 21 एफ से 7.5 प्रतिशत व सी.एस.वी. 30 एफ से 5.8 प्रतिशत अधिक हरे चारों की पैदावार होने के कारण किसानों को अधिक मुनाफा होगा।

इन वैज्ञानिकों की मेहनत लाई रंग : विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. ए.के. छाबड़ा ने बताया कि सीएसवी 44 एफ किस्म को विकसित करने में इस विभाग के चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. पम्पी कुमारी, डॉ.

सत्यवान आर्य, डॉ. एस.के. पाहुजा, डॉ. एन.के. ठकराल एवं डॉ. डी.एस. फोगाट की टीम की मेहनत रंग लाई है। इसके अलावा डॉ. सतपाल, डॉ. जयंती टोकस, डॉ. हरीश कुमार, डॉ. विनोद मलिक एवं डॉ. सरिता देवी का भी विशेष सहयोग रहा है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....पंजाब के सरी
दिनांक .12.11.2020...पृष्ठ संख्या.....2.....कॉलम.....6-8.....

तमिलनाडू, महाराष्ट्र व कर्नाटक में भी बोई जाएगी एच.ए.यू. से विकसित ज्वार की नई किस्म सी.एस.वी. 44-एफ

हिसार, 11 नवम्बर (ब्यूरो):
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि
विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने ज्वार
की नई व उन्नत किस्म सी.एस.वी.
44-एफ विकसित कर एक और
उपलब्धि को विश्वविद्यालय के नाम
किया है। ज्वार की इस किस्म को
विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं
पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग
द्वारा विकसित किया गया है।

इसको भारत सरकार के कृषि
एवं किसान कल्याण मंत्रालय के
कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल
मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन
केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली
में आयोजित 84वाँ बैठक में
अधिसूचित व जारी कर दिया गया
है। बैठक की अध्यक्षता भारतीय
कृषि अनुसंधान परिषद के फसल
विज्ञान के उप-महानिदेशक डॉ.
टी.आर. शर्मा ने की थी। ज्वार
की यह किस्म दक्षिणी राज्यों
मुख्यतः कर्नाटक, महाराष्ट्र और
तमिलनाडु के लिए सिफारिश की गई



ज्वार की उन्नत किस्म विकसित करने वाली टीम कुलपति के साथ।

हालांकि इस किस्म को
विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने
एच.ए.यू. में ही विकसित किया है।

विश्वविद्यालय के आनुवांशिकी
एवं पौध प्रजनन विभाग के
विभागाध्यक्ष डॉ. ए.के. छाबड़ा ने
बताया कि सी.एस.वी. 44-एफ
किस्म को विकसित करने में इस
विभाग के चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों
डॉ. पम्मी कुमारी, डॉ. सत्यवन
आर्य, डॉ. ए.स.के. पाहुजा, डॉ.
एन.के. ठकराल एवं डॉ. डी.एस.

फौगाट की टीम की मेहनत रंग लाइ
है। इसके अलावा डॉ. सतपाल, डॉ.
जयंती टोकस, डॉ. हरीश कुमार, डॉ.
विनोद मलिक एवं डॉ. सरिता देवी
का भी विशेष सहयोग रहा है। चारा
अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. डी.एस.
फौगाट ने बताया कि कमेटी द्वारा
इसकी गुणवत्ता व पैदावार को ध्यान
में रखते हुए अभी देश के दक्षिणी
राज्यों (तमिलनाडु, महाराष्ट्र और
कर्नाटक) में हरे चारे की उत्तम पैदावार
के लिए सिफारिश किया गया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....उत्तर उत्तरा
दिनांक 12.11.2020 पृष्ठ संख्या.....5 कॉलम.....1-4

रोधः मीठी ज्वार खाकर अधिक दूध देंगे पशु एचएयू के वैज्ञानिकों ने विकसित की ज्वार की सीएसवी 44 एफ किस्म

अमर उत्तरा ब्लूग

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के कृषि वैज्ञानिकों ने ज्वार की नई व उन्नत किस्म सीएसवी 44 एफ (मीठी ज्वार) विकसित की है। ज्वार की इस किस्म को विश्वविद्यालय के

ज्वार में प्रोटीन व पाचनशीलता अधिक है
जिससे पशु के दूध उत्पादन में बढ़ोतरी होगी। अनुबांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग ने विकसित किया है। इस ज्वार को पशु बड़े चाव से खाएंगे

और दूध भी अधिक देंगे। ज्वार की यह किस्म मुख्यतः कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए मुफीद मानी गई है।

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने बताया कि सीएसवी 44 एफ किस्म में अन्य किस्मों की तुलना में प्रोटीन व पाचनशीलता अधिक है, जिससे पशु के



“

मैं ज्वार की नई किस्म विकसित करने वाले वैज्ञानिकों को बधाई देता हूं। इससे पहले भी चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों द्वारा आठ किस्में विकसित की जा चुकी हैं, जो अपने आप में बड़ी उपलब्धि है।

- प्रो. समर सिंह, कुलपति, एचएयू।

दुग्ध उत्पादन में बढ़ोतरी होगी। इस किस्म में मिठास 10 प्रतिशत से भी अधिक व स्वादिष्ट होने के कारण पशु इसे खाना अधिक पसंद करते हैं।

इस किस्म में हरे चारे के लिए प्रसिद्ध किस्म सीएसवी 21 एफ से 7.5 प्रतिशत व सीएसवी 30 एफ से 5.8 प्रतिशत अधिक हरे चारे की पैदावार

किस्म को विकसित करने में इन वैज्ञानिकों का रहा योगदान विश्वविद्यालय के आनुबांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एके छबड़ा ने बताया कि डॉ. पम्पी कुमारी, डॉ. सत्यवान आर्य, डॉ. एसके पाहुजा, डॉ. एनके ठकराल एवं डॉ. डीएस फोगाट की टीम ने यह किस्म तैयार की है। साथ ही डॉ. सतपाल, डॉ. जयंती टोकस, डॉ. हरीश कुमार, डॉ. विनोद मलिक व डॉ. सरिता देवी का भी विशेष सहयोग रहा है। चारा अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. डीएस फोगाट ने बताया कि इसकी गुणवत्ता व पैदावार को व्यान में रखते हुए अभी देश के दक्षिणी राज्यों में हरे चारे की उत्तम पैदावार के लिए सिफारिश किया गया। हालांकि उन्होंने इस को हरियाणा के विभिन्न क्षेत्रों में परीक्षण के तौर पर लगाया था, जहां इसके सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं। इसलिए यहां किसानों के लिए भी इसकी सिफारिश संबंधी प्रस्ताव जल्द ही कमेटी को भेजा जाएगा।

होने के कारण किसानों को अधिक मुनाफा होगा। इसे लवणीय भूमि में भी उगाया जा सकता है। अधिक बारिश व तेज हवा चलने पर भी यह किस्म गिरती नहीं है। ज्वार में प्रकृतिक तौर पर पाया जाने वाला विषैला तत्व धूरिन इस किस्म में बहुत ही कम है। यह तनाछेदक कीट के प्रति भी प्रतिरोधी है व इसमें पत्तों पर लगने वाले रोग भी नहीं लगते। इस किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 407 किवंटल प्रति हेक्टेयर है, जो सीएसवी 21 एफ और सीएसवी 30 एफ से क्रमशः 7.5 प्रतिशत व 5.8 प्रतिशत अधिक है। इस किस्म की सूखे चारे की औसत पैदावार 115 किवंटल प्रति हेक्टेयर है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|--------------------|-------------------|---------------|------|
| The Hawk | 12.11.2020 | Online | -- |

[Home](#) > [State News](#) > [Haryana](#) > Haryana Agri University developed new Sorghum variety CSV 44F mainly for southern states

Haryana Agri University developed new Sorghum variety CSV 44F mainly for southern states

• The Hawk | 11 Nov 2020 5:07 PM



Chandigarh (The Hawk): Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University, Hisar has developed a new improved variety of sorghum CSV 44F.

This newly developed variety is recommended for the southern states mainly Karnataka, Maharashtra and Tamil Nadu. Vice Chancellor of the University, Professor Samar Singh congratulated the scientists for this achievement and called for continuous efforts in future as well. Director of Research, Dr. S.K. Sehrawat highlighted that the CSV 44F variety has 10 percent higher protein content, delicious and also high digestibility than other varieties, due to which it is helpful in increasing the milk production of the animal.

Also Read - [DCs in Haryana ordered to publish draft list of Collector Rates by December 15](#)

The variety has no lodging problems and most suitable in moderately to high rainfall areas. Naturally poisonous dhurin content is also very less in this variety and is moderate tolerant to stem borer and shoot fly. The average green fodder yield of this variety is 407 q/ha, which is 7.5 percent and 5.8 percent higher than other improved varieties of sorghum CSV 21F and CSV 30F, respectively.

This variety has been developed by the Forage section, the Department of Genetics and Plant Breeding of the university. This variety notified and released by the 'Crop Standards, Notification and Approval Central Sub-Committee' of the Department of Agriculture and Co-operation, Ministry of Agriculture and Farmers Welfare, Government of India. According to Dr. A.K. Chabra, HOD, Genetics and Plant Breeding that this variety is developed by the team of scientists namely Dr. Pammie Kumar, Dr. Satyawan Arya, Dr. S.K. Pahuja, Dr. N.K. Thakral and Dr. D.S. Phogat, Dr. Satpal, Dr. Jayanthi Tokas, Dr. Harish Kumar, Dr. Vinod Malik and Dr. Sarita Devi. (JMT-INF).



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|--------------------|------------|--------------|------|
| हैलो हिसार | 12.11.2020 | -- | -- |

तमिलनाडू, महाराष्ट्र व कर्नाटक में भी बोई जाएगी एचएयू से विकसित ज्वार की नई किरम सीएसवी 44 एफ



हैलो हिसार न्यूज़

हिसार : चौधरी चरण सिंह किस्म को भारत सरकार के कृषि हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि वैज्ञानिकों ने ज्वार की नई व कृषि एवं सहयोग विभाग की उत्तर किस्म सीएसवी 44 एफ 'फसल मानक, अधिसूचना एवं विकसित कर एक ओर उपलब्धि को अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा विश्वविद्यालय के नाम किया है। नई दिल्ली में आयोजित 84वाँ बैठक ज्वार की इस किस्म को में अधिसूचित व जारी कर दिया गया विश्वविद्यालय के अनुबांशिकी एवं है। बैठक की अध्यक्षता भारतीय पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग कृषि अनुसंधान परिषद के फसल द्वारा विकसित किया गया है। विज्ञान के उप-महानिदेशक डॉ.

टी.आर. शर्मा ने की थी। ज्वार की यह किस्म दक्षिणी राज्यों मुख्यतः कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडू के लिए सिफारिश की गई है। हालांकि इस किस्म को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एचएयू में ही विकसित किया है। मिठास अन्य किस्मों से

10 प्रतिशत तक अधिक विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि सीएसवी 44 एफ किस्म में अन्य किस्मों की तुलना में प्रोटीन व पाचनशीलता अधिक है, जिसकी वजह से पशु के दुग्ध उत्पादन में बढ़ोतरी करती है। इस किस्म में मिठास 10 प्रतिशत से भी अधिक व स्वादिष्ट होने के कारण पशु इसको खाना अधिक पसंद करते हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

| | | | |
|--------------------|------------|--------------|------|
| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
| दैनिक सवेरा | 12.11.2020 | -- | -- |

तमिलनाडू, महाराष्ट्र और कर्नाटक में भी बोई जाएगी एचएयू से विकसित ज्वार की किस्म

● एचएयू वैज्ञानिकों ने ज्वार की नीटी, अधिक प्रोटीन व पाचनशीलता वाली किस्म की विकसित किया गया है।

हिसार, 11 नवंबर (सुरेंद्र सोहौ) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने ज्वार की नई व ऊत किस्म 'सीएसवी 44 एफ' किसित कर एक ओर ऊतकी ओर विश्वविद्यालय के नाम किया है। ज्वार की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवाशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कलापन मंत्रालय के कृषि एवं सहायता विभाग व्यक्त किया गया है। अनुभवन एवं अनुग्रहन केंद्रीय व्यापारी ज्वार नई दिल्ली में आयोजित 84वीं बैठक में अधिक्षित व जारी कर दिया गया है। बैठक की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के फसल विज्ञान के अ-महानिदेशक डॉ. टी.आर. शर्मा ने की थी। ज्वार की वर्किस्म दक्षिणी राज्यों मुख्यतः कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए सिफारिश की गई है। हालांकि इस किस्म को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों



ज्वार की ऊत किसित करने वाली टीम सदरस

ने एचएयू में ही विकसित किया है। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहायता ने बताया कि सीएसवी 44 एफ किस्म में अन्य किस्मों की तुलना में प्रोटीन व पाचनशीलता अधिक है, जिसकी वज्रा से पशु के दुध उत्पादन में बढ़ोत्तरी करती है। इस किस्म में मिटास 10 प्रतिशत से भी अधिक व स्थानिक होने के कारण पशु इसको खाना अधिक पसंद करते हैं। इस किस्म में हरे चारे के लिए प्रसिद्ध वित्त सी.एस.वी. 21 एफ से 7.5 प्रतिशत व सी.एस.वी. 30 एफ से 5.8 प्रतिशत अधिक हरे चारे की पैदावार होने के कारण किसानों को अधिक मुनाफा होगा। विश्वविद्यालय के अनुवाशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के वैज्ञानिकों एवं एक

छावडा ने बताया कि सीएसवी 44 एफ किस्म को विकसित करने में इस विभाग के चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. पर्मी कुमारी, डॉ. सलतवान अर्मी, डॉ. एस.के. पाहुजा, डॉ. एन.के. ठक्कराल एवं डॉ. डी.एस. फागाट की टीम की महत्व रंग लाई है। इसके अलावा डॉ. हरीश कुमार, डॉ. विनोद मलिक एवं डॉ. सरिता देवी का भी विशेष सल्लोग रहा है।

ज्वार की आठ किस्में विकसित : कुलपति

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समाज सिंह ने कृषि वैज्ञानिकों द्वारा इस उपलब्धि पर बधाई दी और भवित्य में भी निरंतर प्रयासरत रहने का आह्वान किया। उन्होंने बताया कि इससे पहले भी विश्वविद्यालय के चारा

प्रदेश के लिए सिफारिश का भेजेंगे प्रपोजल

नई किस्म को विकसित करने वाली टीम सदरस अनुवाशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. डी.एस.फोगाट ने बताया कि हालांकि इस किस्म को एचएयू में ही विकसित किया गया है, लेकिन कम्पटी द्वारा इसकी गुणवत्ता व घोषणा के दक्षिणी राज्यों (तमिलनाडू, महाराष्ट्र और कर्नाटक) में हो चारे की उत्तम पैदावार के लिए सिफारिश किया गया। इस किस्म को प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में परीक्षण के तौर पर लगाया गया था, जहां इसके लाहूत ही सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं। इसलिए यहां किसानों के लिए भी इसकी सिफारिश संबंधी प्रपोजल जल्द ही कम्पटी को भेजा जाएगा।

अनुभाग के वैज्ञानिकों द्वारा विश्वविद्यालय की स्थापना से लेकर अब तक आठ किस्में विकसित की जा चुकी हैं, जो अपने आप में इस क्षेत्र में बड़ी उपलब्धि हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---------------------|-------------------|--------------|------|
| एचआर ब्रेकिंग न्यूज | 12.11.2020 | -- | -- |

**तमिलनाडू, महाराष्ट्र व कर्नाटक में भी बोई जाएगी
एचएयू सेविकसित ज्वार की नई किस्म सीएसवी 44 एफ**

एचएयू वैज्ञानिकों ने ज्वर की मीठी, अधिक प्रोटीन व पाचन-रसायनता वाली किस्म सीएसवी४४ एफ विकसित की, दक्षिण भारत के राज्यों के लिए की गई सिफारिश।

एचआर ब्रेकिंग न्यूज

हिसार। चौथी चरण सिंह हरियाणा कृषि विधायिकालय के कृषि वैज्ञानिकों ने ज्ञात की नई व उन्नत किसम सीएससी 44 एक विकसित कर एक और उपविधि को विधायिकालय के नाम दिया है। ज्ञात की किसम विधायिकालय के अनुशासिकी एवं पैदा प्रजलन विभाग के चारा अनामा द्वारा विकसित किया गया है।



मात्र वीर्य का अविकल्पना विकास करने वाली विद्या ज्ञान

जिसका उन्नाति करना चाहिए। यह काम दिल्ली में आयोगी 8वीं बैठक में अधिवृत्ति व जारी कर दिया गया है। बैठक की असत्तमा भारतीय कॉर्ट अनुचरण की प्रवृत्ति विज्ञान के उप-महानिदेशक डॉ. टी.आर. कौर ने को भी ज्ञान की यह किस दृष्टिकोण सभ्यता-कानूनक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए सिफारिश की थी। इसको इस किस्म की विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एवं एयू में ही विश्वविद्यालय की है।

मिठास अन्य किस्मों से 10 प्रतिशत तक अधिक व्यापारिकता व्यापारिकता के अनुसार निर्देशक डॉ. एस.के. सहराओं ने बताया कि मिठासीया 44 एक विषय में अन्य विषयों की तुलना में प्रोटीन व पाचनशीलता अधिक है, जिसकी वजह से पाशु के द्वारा उत्पादन में बहुत ज़्यादा लगती है।

इस किस्म में मिठास 10 प्रतिशत से भी अधिक व्यापारिक होने के कारण प्राप्ति

अब तक ज्ञान की आठ
किसिं विवरित कर चुका
है परमार्थः कुण्ठपति
प्राकृत संसार सिंह

विवरितवालके कुलपति
प्रसेतुवामां याते हो ते नृप
वैदिनिकों हात इन उपर्युक्त
रथ बाहुदी औ अंग दीप
भी निरुपयोग उपर्युक्त रथों का
आवाहन किए। उड़ाने वालों
की इससे वहाँ भी
विवरितवालके लाग
अनुभव के वैदिनिकों द्वारा
विवरितवालको स्थानमें
लेकर अब तक आठ किमी
विवरित कर चुके हैं, जो
अपने आप में इस क्षेत्र में

उत्तर कलन वाला दान सदस्या १५८, ३१३ (21/6)

उत्तर इसको खाना अधिक परसंद करते हैं। इस किस्म में हरे चारों के लिए प्रसिद्ध किस्म सी-एस-पी २१ एक से ७.५ प्रतिशत व एस-एस-पी ३० एक से ५.४ प्रतिशत कहा जाता है। इसकी उत्तर की ओर चारों की पैदावार होने के कारण किसानों को अधिक मुनाफा होता। सिर्फ़ इसकी किए गए उचित छात के सिवाय प्रतिशत के अनुसार यह किस्म अधिक पैदावार देने में सक्षम है और इसे लवायीय भूमि में भी उत्तर हवा विशेष रूप से अधिक कम कीटों द्वारा बचाया जाता है।

जा जा सकता है। अधिक बारिंग व तेज चलने पर भी यह किस्म गिरती नहीं है। यह एक उत्तम किस्म की औसत ऐप्रिल में बढ़ती है औ अप्रैल तक इस किस्म में बढ़ती है। यह एक सेसीएस 44 एक किस्म तनाहार्डेक के प्रति प्रतिशोधी है वह इसमें पहली पर दोस्री पर भी जारी रहती है।

म है। इस किस्म की हारे
वार 407 किवॉल्ट प्रति
ज्वार की अन्य बेहतर
एफ और सीएसवी 30
प्रतिशत व 5.8 प्रतिशत
किस्म की सूखे चारों की
5 किवॉल्ट प्रति हेक्टेयर
कसित उन्नत किस्मों से



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|--------------------|------------|--------------|------|
| सच कहूं | 12.11.2020 | -- | -- |

कृषि

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार के कृषि वैज्ञानिकों ने की विकसित

ज्वार की उन्नत किस्म 'सीएसवी 44 एफ' ईजाद

■ नई किस्म में ग्रोटीन व पाचनशीलता है अधिक

हिसार (सच कहूं न्यूज)। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार के कृषि वैज्ञानिकों ने पशुओं के चारों की फसल ज्वार की नई व उन्नत किस्म 'सीएसवी 44 एफ' विकसित कर विश्वविद्यालय के नाम एक और उपलब्ध दर्ज करवा दी है। ज्वार की इस किस्म के विश्वविद्यालय के अनुबांधिकों एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की



'फसल गानक, अधिसूचना एवं शर्मा ने की थी। ज्वार की यह किस्म अनुमोदन केंद्रीय उप-संस्थान द्वारा दीक्षिणी राज्यों मुख्यतः कर्नाटक, नई दिल्ली में आयोजित 84वीं बैठक महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। बैठक को अध्यक्षता भारतीय कृषि किस्म को विश्वविद्यालय के अनुसंधान परिषद के फसल विभाग वैज्ञानिकों ने एवं यू. में ही विकसित होने के कारण किसानों को अधिक युनाइट भी होगा।

क्षेत्रों में परीक्षण के तौर पर लगाया गया था, जहां इसके बहुत ही बताया कि 'सीएसवी 44 एफ' किस्म सकारात्मक परिणाम सापेन आए हैं। में अन्य किस्मों की तुलना में ग्रोटीन इसलिए वहां किसानों के लिए भी व पाचनशीलता अधिक है, जिसकी इसकी सिफारिश संबंधी प्रोजेक्ट वज्र से यह पशु के दुध उत्पादन में जल्द ही कमेटी को भेजा जाएगा। बढ़ोत्तरी करती है। इस किस्म में उन्होंने बताया कि चारा अनुभाग मिट्टिस 10 प्रतिशत से भी अधिक व 1970 से अब तक ज्वार की कुल स्वादिष्ट हड्डें के कारण पशु इसे खाना आठ किस्में विकसित कर चुका है। काफी पसंद करते हैं। इस किस्म में इनमें से बहु-कटाई वाली किस्म हरे चारों के लिए प्रसिद्ध किस्म एसएसजी 59-3 (1978), दो 'सीएसवी 21 एफ' से 7.5 प्रतिशत कटाई वाली किस्म एचसी 136 व 'सीएसवी 30 एफ' से 5.8 (1982) व एक कटाई वाली किस्में प्रतिशत अधिक हरे चारों की पैदावार एचसी 308 (1996), एचजे 513 (2010) और एचजे 541 (2014) किसानों की पहली पसंद बनी हैं। इस किस्म को प्रदेश के विभिन्न बनी हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

| | | | |
|--------------------|-------------------|--------------|------|
| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
| हिसार टूडे | 11.11.2020 | -- | -- |

तमिलनाडू, महाराष्ट्र व कर्नाटक में भी बोई जाएगी एचएयू से विकसित ज्वार की नई किस्म सीएसवी 44 एफ

एचएयू वैज्ञानिकों ने ज्वार की मीटी, अधिक प्रोटीन व पाचनशीलता वाली किस्म सीएस्वी44 एफ विकसित की, दक्षिण भारत के राज्यों के लिए की गई सिफारिश।

टुडे न्यूज | हिसार

चौथी चरण सिंह हरियाला कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने ज्ञार की नई उत्तर किस्म सीएस१४ ४४ एक विकसित कर एक और उपलब्धिको विश्वविद्यालय के नाम किया है। ज्ञार की इस किसिम को विश्वविद्यालय के अनुसारिकी एवं पौधे प्रजनन विभाग के चारों अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है।



जात यी भू उत्तर किसम लोकी 44 एक का छहल पोटी जात की उत्तर किसम विकल्प करते लाई तम लगाया। तब लृष्ण उत्तर किसम में बहुत ही कम है। योंसे प्रत्येक 44 एक किसम नांदेहो कीटे के प्रति प्राप्तेषों व इसम प्रति पाल लगाया रोग नहीं लगाया। विद्यामार्ग और उत्तरामार्ग और नांदेहो रोग प्रतिरोधकात्री को मुक्ति से यह एक उत्तर किसम है। इस किसम को हर चारों की ओर पैदाहरण करना चाहिए। जो की कठी की ओर बढ़ावा देती है विद्यामार्ग सीमोंसीमा 21 एवं ओर भौतिक विद्यामार्ग सीमोंसीमा 20 एवं ओर भौतिक 30 एक के समान 7.5 प्रतिशत का अधिक है। इस किसम की सूची चर्च की ओर पैदाहरण करना चाहिए। इस किसम की उत्तर किसम से अधिक है। इस किसम की उत्तर किसम से अधिक है।

इन वैज्ञानिकों की मेनेन्ट टाई रु
 सिविलियर्स के आखिरी एवं पौर प्राचलिन विभाग के शिवाजीपुराणा डॉ. ए. के. छाबड़ा ने
 जारी किया है नीतीसर्ही 44 प्रकाशनों विवरात करने के दूसरा विभाग जो वाराणसी के
 लोकप्रिय विद्यालयों की विवरात करता है। इनमें से कुछ ही अध्ययन और
 अध्यापन अर्थात् एवं प्राचार, एवं धर्म, लोकान्वय एवं
 इतिहास, फोटोग्राफी इत्यादि की मेनेन्ट रुप से दर्शक हैं। इनका अन्यतरा ज्ञानालय, डॉ. तारानी-
 देव एवं डॉ. विजयलक्ष्मी द्वारा दर्शक की तरफ से दर्शक है।

प्रदेश के लिए सिफारिश की गयी प्रपोजेट ने यह फिल्म को विकास करने वाली टीवन सम्बन्धीत अधिकारी एवं प्रबोधन विभाग के घाटा अधिकारी के अवैधता तथा एस.एस. एंजोले ने जारी कर दिया। इस फिल्म को पर्याप्त रूप से विकास करने वाली हो रही थी। लेकिन एस.एस. एंजोले ने इसी फिल्म का विवाह करने वाले में से एक दूसरी व्यक्ति का विवाह करने वाले के साथ ने इस फिल्म को विवाह करने वाली थी। इस फिल्म को प्रदेश के विकास क्षेत्र में परिवाह का तौर पर लाना चाहा था, जहाँ इसके बाद ही सारकारी परिवाह आगे आया। इसके बाद ही एस.एस. एंजोले ने इसे लिया और उसकी विवाहित व्यक्ति को लिये और उसकी विवाहित व्यक्ति को लिये। उसके बाद यह फिल्म के घाटा अधिकारी ने एस.एस. एंजोले की कुल अवैधति को बताया कि यह बुझा है। इसने वह बहुत बड़ी वाली फिल्म एस.एस.जी. ५६-३ (1978), जो कार्यकृत वाली फिल्म एस.एस.जी. १३ (1982) वह एक बहुत बड़ी वाली फिल्म एवं एस.एस.जी. ५१ (2010) एवं एस.एस.जी. ५१ (2014) फिल्मों की पहचान प्रदेश वाली है।

अब तक ज्यार
की आठ किस्में
विकसित कर चुका
है प्राचार।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर रमन रिंग ने कथि वैश्वविद्यालय द्वारा इस उपलब्धि पर व्यक्ति ही और अभियान में भी सिरंगर प्रबलताएँ रखने का आगामी उद्देश्य बताया कि इससे पहले भी विश्वविद्यालय के थामा अनुबंधन के वैश्वविद्यालय द्वारा विश्वविद्यालय की स्वतन्त्रता तो रखता अब तक अब इससे विश्वविद्यालय की जी युक्ति है, जो अब आप में इस क्षेत्र में वही उपलब्धि है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|--------------------|------------|--------------|------|
| हरियाणा वाटिका | 12.11.2020 | -- | -- |

तमिलनाडू, महाराष्ट्र व कर्नाटक में भी बोई जाएगी एचएयू से विकसित ज्वार की नई किस्म सीएसवी 44 एफ

वाटिका@हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने ज्वार की नई व उन्नत किस्म सीएसवी 44 एफ विकसित कर एक और उपलब्धि को विश्वविद्यालय के नाम किया है। ज्वार की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की हाफसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति द्वारा नई दिल्ली में आयोजित 84वीं बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है।

बैठक की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के फसल विज्ञान के उप-महानिदेशक डॉ. टी.आर. शर्मा ने की थी। ज्वार की यह किस्म दक्षिणी राज्यों मुख्यतः कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए सिफारिश की



गई है। हालांकि इस किस्म को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एचएयू में ही विकसित किया है। मिठास अन्य किस्मों से 10 प्रतिशत तक अधिक विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस. के. सहरावत ने बताया कि सीएसवी 44 एफ किस्म में अन्य किस्मों की तुलना में प्रोटीन व पाचनशीलता अधिक है, जिसकी वजह से पशु के दुग्ध उत्पादन में बढ़ोत्तरी करती है। इस किस्म में मिठास 10 प्रतिशत से भी अधिक व स्वादिष्ट

होने के कारण पशु इसको खाना अधिक पसंद करते हैं। इस किस्म में हरे चारे के लिए प्रसिद्ध किस्म सी.एस.वी. 21 एफ से 7.5 प्रतिशत व सी.एस.वी. 30 एफ से 5.8 प्रतिशत अधिक हरे चारे की पैदावार होने के कारण किसानों को अधिक मुनाफा होगा। सिफारिश किए गए उचित खाद व सिचाई प्रबंधन के अनुसार यह किस्म अधिक पैदावार देने में सक्षम है और इसे लवणीय भूमि में भी उगाया जा सकता है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|--------------------|------------|--------------|------|
| जगमार्ग | 11.11.2020 | -- | -- |

खबर एचएयू वैज्ञानिकों ने ज्वार की मीठी, अधिक प्रोटीन वाली किस्म विकसित की तमिलनाडु, महाराष्ट्र और कर्नाटक में भी बोर्ड जाएगी एचएयू से विकसित ज्वार की नई किस्म सीएसवी 44 एफ

दोस्रे बैनर

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने ज्वार की नई व ऊत किस्म सीएसवी 44 एफ विकसित कर एक ओर उत्तमता को विश्वविद्यालय के नाम किया है।

ज्वार की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुसंधानी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में



आयोजित 84वीं बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। बैठक की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के फसल विज्ञान के उप-महानिदेशक डॉ. टी.आर. शर्मा ने की थी। ज्वार की यह किस्म दक्षिणी राज्यों मुख्यतः कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए सिफारिश की गई है। हालांकि इस किस्म को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एचएयू में ही विकसित किया है।

मिटास अन्य किस्मों से 10 प्रतिशत तक अधिक

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि सीएसवी 44 एफ किस्म में अन्य किस्मों की तुलना में प्रोटीन व पाचनशीलता अधिक है, जिसकी वजह से पशु के दुष्प्रभाव में बढ़ोत्तरी करती है। इस किस्म में मिटास 10 प्रतिशत से भी अधिक व खाद्यादिष्ट होने के कारण पशु इसको खाना अधिक पसंद करते हैं। इस किस्म में हरे चारे के लिए प्रसिद्ध किस्म सी.एस.वी. 21 एफ से 7.5 प्रतिशत य सी.एस.वी. 30 एफ से 5.8 प्रतिशत अधिक हरे चारे की पैदावार होने के कारण किसानों की अधिक मुनाफ़ा होगा। सिफारिश किए गए उचित खाद्य व सिचाई प्रबंधन के अनुसार यह किस्म अधिक पैदावार देने में सक्षम है और इसे लकड़ीय भूमि में भी उगाया जा सकता है। अधिक खारिज य तेज हवा चलने पर भी यह किस्म गिरती नहीं है। ज्वार में प्राकृतिक तीर पर पाया जाने वाला विषेश तत्त्व धूरिन इस किस्म में बहुत ही कम है। सीएसवी 44 एफ किस्म तनातेपक कीट के प्रति प्रतिरोधी है व इसमें पत्तों पर लगने वाले रोग भी नहीं लगते। वैज्ञानिकों के अनुसार चारा उत्पादन, पौष्टिकता एवं रोग प्रतिरोधकता की दृष्टि से यह एक उत्तम किस्म है। इस किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 407 किलोल प्रति हेक्टेयर है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|--------------------|------------|--------------|------|
| पांच बजे न्यूज | 11.11.2020 | -- | -- |

एचएयू वैज्ञानिकों ने ज्वार की सीएसवी44 एफ किस्म विकसित की, दक्षिण भारत के राज्यों के लिए की गई सिफारिश

तमिलनाडु, महाराष्ट्र व कर्नाटक में भी बोई जाएगी एचएयू से विकसित ज्वार की नई किस्म सीएसवी 44 एफ

पांच बजे न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने ज्वार की नई व उत्तर किस्म सीएसवी 44 एफ विकसित कर कर एवं उपलब्ध को विश्वविद्यालय के नाम किया है। ज्वार की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुबांधी एवं पौध प्रबन्धन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसिन कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फलत मानक, अधिक्षमता एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-संस्थान' द्वारा नई दिल्ली में अधियोजित 84वीं बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। बैठक की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के फलत विज्ञान के उप-महानिदेशक डॉ. डी.आर. शर्मा ने की थी। ज्वार की यह किस्म दृष्टिगोरत्तमे मुख्यतः कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए सिफारिश की गई है। हालांकि इस किस्म को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एचएयू में ही विकसित किया है।

पिछले अन्य किस्मों से 10 प्रतिशत तक अधिक



विश्वविद्यालय के अनुबांधन निदेशक डॉ. एस.के. सहरावर ने बताया कि सीएसवी 44 एफ किस्म में अन्य किस्मों की तुलना में उचित खाद व विचाहं प्रबन्धन के अनुसार प्रोटीन व पाचनशालता अधिक है। विज्ञान वज्र से पृथु के दुष्प उत्पादन में बढ़ती है। इस किस्म में मिट्टी 10 प्रतिशत से भी अधिक व व्यापाद होने के कारण पूर्ण इसको खाना अधिक पसंद करते हैं। इस किस्म में हरे चारे के लिए प्रसिद्ध किस्म सीएसवी 21 एफ से 7.5 प्रतिशत व सी.एस.वी. 30 एफ से 5.8 प्रतिशत व

रोग भी नहीं लगते। वैज्ञानिकों के अनुसार ज्वार उत्पादन, पीछिकता एवं रोग प्रतिरोधकता की दृष्टि से यह एक उत्तम किस्म है। इस किस्म की हरे चारे की ओसत पैदावार 407 किलोग्राम प्रति हेक्टेएक्टर है। जोकि ज्वार को अन्य बैठक विस्मों सीएसवी 21 एफ और सीएसवी 30 एफ से बढ़ाया गया है। इस किस्म की सुखे चारे की असत पैदावार 115 किलोग्राम प्रति हेक्टेएक्टर है। जोकि ज्वार की अन्य बैठक विस्मों से अधिक है।

इन वैज्ञानिकों की महान लातुं रंग विश्वविद्यालय के अनुबांधिकों एवं पौध प्रबन्धन विभाग के ज्वार अनुभाग के अन्यकड़ी डॉ. एस.संगम ने बताया कि हालांकि इस किस्म को एचएयू में ही विकसित किया गया है, लेकिन कान्ती द्वारा इसकी गुणवत्ता व पैदावार को ज्वार में रखते हुए अन्य देशों के वैज्ञानिकों द्वारा अनुभाग और कर्नाटक में हरे चारे की उत्तम पैदावार के लिए सिफारिश किया गया। इस किस्म को प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में परीक्षण के तौर पर लाना चाहिए। जहां इसके बहुत ही सकारात्मक परिणाम सापेने आए हैं। इसलिए यहां विस्मनों के लिए भी इसकी सिफारिश संबंधी प्रपञ्च जटिल ही कमटी को भेजा जाएगा। उन्होंने बताया कि ज्वार अनुभाग 1970 से अब तक ज्वार की कुल अष्ट किस्म विकसित कर सका है। इनमें से बहु कटाई वाली किस्म एस.एस.जी. 59-3 (1978), दो कटाई वाली किस्म एस.सी. 136 (1982) व एक कटाई वाली किस्म एस.सी. 308 (1996), एच.जे. 513 (2010) और एच.जे. 541 (2014) किस्मों की फली पसंद बनी हैं। अब तक ज्वार की अष्ट किस्में विकसित कर चुका है।

प्रदेश के लिए सिफारिश का भेजेंगे प्रोजेक्ट नई किस्म को विकसित करने वाली



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---------------------|------------|--------------|------|
| समस्त हरियाणा न्यूज | 11.11.2020 | -- | -- |

तमिलनाडू, महाराष्ट्र, व कर्नाटक में भी बोई जाएगी एचएयू से विकसित ज्वार की नई किरम सीएसवी-44 एफ

एचएयू वैज्ञानिकों ने ज्वार की मीठी, अधिक प्रोटीन व पाचनशीलता वाली किस्म सीएसवी44 एफ विकसित की, दक्षिण भारत के राज्यों के लिए की गई सिफारिश



समस्त हरियाणा न्यूज हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने ज्वार की नई व ऊन किस्म सीएसवी 44 एफ विकसित कर एक और उत्तमिक को विश्वविद्यालय के नाम किया है। ज्वार की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुभाग की गई अनुभाग की गया।

अब तक ज्वार की आठ किस्में विकसित कर चुका है एचएयू : वीसी

विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचन एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित 84वीं बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। बैठक की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के फसल विज्ञान के उप-महानिदेशक डॉ. टी.आर. शर्मा ने की थी। ज्वार की यह किस्म दक्षिणी राज्यों मुख्यतः कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडू के लिए

मिटास अन्य किस्मों से 10 प्रतिशत तक अधिक

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सदरावत ने बताया कि सीएसवी 44 एफ किस्म में अन्य किस्मों की तुलना में प्रोटीन व पाचनशीलता अधिक है, जिसकी वजह से पश्चु के दुध उत्पादन में बढ़ोत्तरी करती है। इस किस्म में मिटास 10 प्रतिशत से भी अधिक व त्वचित्त होने के कारण पश्चु इसको खाना अधिक पसंद करते हैं। इस किस्म में हरे चारे के लिए प्रसिद्ध किस्म सी.एस.वी. 21 एफ से 7.5 प्रतिशत व सी.एस.वी. 30 एफ से 5.8 प्रतिशत अधिक हरे चारे की पैदावार होने के कारण किसानों को अधिक मुनाफा होगा। सीएसवी 44 एफ किस्म तात्कालिक कोट के प्रति प्रतिरोधी है व इसमें पत्तों पर लगने वाले रोग भी नहीं लगते।

इन वैज्ञानिकों की मेहनत लाई रंग

विश्वविद्यालय के आनुवाशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. ए.के. छाहड़ा ने बताया कि सीएसवी 44 एफ किस्म को विकसित करने में इस विभाग के चार अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. पम्पी कुमारी, डॉ. सत्यवान आर्य, डॉ. एस.के. पाहुजा, डॉ. एन.के. उकराल एवं डॉ. डी.एस. फोगाट की टीम को मेहनत रंग लाई है। इसके अलावा डॉ. सतपाल, डॉ. जयेन्द्र देवकर, डॉ. हरीश कुमार, डॉ. विनोद मलिक एवं डॉ. सरिता देवी की भी विशेष सहयोग रहा है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|--------------------|------------|--------------|------|
| अजीत समाचार | 11.11.2020 | -- | -- |

तमिलनाडु, महाराष्ट्र व कर्नाटक में भी बोई जाएगी एचएयू से विकसित ज्वार की नई किस्म एचएयू वैज्ञानिकों ने ज्वार की मीठी, अधिक प्रोटीन व पाचनशीलता वाली किस्म सीएसवी 44 एफ विकसित की

अन्य किस्मों से अधिक गिरावट



हिसार, 11 नवम्बर (राज पराशर): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने ज्वार की नई व उन्नत किस्म सीएसवी 44 एफ विकसित कर एक और जलालबाद को विश्वविद्यालय के नाम किया है। ज्वार की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुसंधान एवं पौधे प्रबन्धन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं संस्कारण मंत्रालय के कृषि एवं संस्कारण विभाग की 'फसल मानक, अधिकृत एवं अनुमोदन केन्द्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित 84वीं बैठक की अधिकृतता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के फसल विभाग के एवं कैलेक्टर की वताया कि सीएसवी 44 एफ, के सहायता से वर्तमान में अन्य किस्मों की तुलना में

ज्वार की उन्नत किस्म विकसित करने वाली टीम के सदस्यों के साथ कुलपति प्रो. समर सिंह। (छाया: राज पराशर) अ.महानिंदेश्वर द्वा. टीआर शर्मा ने की प्रोटीन व पाचनशीलता अधिक है, जिसकी को अधिक मुनाफा होगा। अधिक वारिश व थी। ज्वार की यह किस्म दक्षिणी उज्ज्वल एवं सुख्त : कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए सिकारिय की गई है। हालांकि इस किस्म को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने वजह से पूर्ण के दुध उत्पादन में बढ़ोतारी तेज हवा चलने पर भी यह किस्म गिरती करती है। इस किस्म में मिट्टी 10 प्रतिशत नहीं है। ज्वार में प्राकृतिक तीव्र पर पाश जाने से भी अधिक व स्वास्थ्य होने के कारण पूर्ण वाला विकैल तत्त्व धूरिय इस किस्म में हो जाना अधिक पसंद करते हैं। इस ही काम है। सीएसवी 44 एफ किस्म तनाहिदक कीट के प्रति प्रतिरोधी है व इसमें मलिक एवं द्वा. सत्तित देवी का भी विशेष सहयोग होता है। विश्वविद्यालय के कुलपति सीएसवी 21 एफ से 7.5 प्रतिशत व पत्तों पर लाने वाले थे भी नहीं लाते। सीएसवी 30 एफ से 5.8 प्रतिशत अधिक वैज्ञानिकों के अनुसार चारा उपलब्ध होने पर ज्वार की उपलब्धि पर बढ़ाई दी।

Go to Settings to activate Windows.

© 2021 Microsoft Corporation. All rights reserved.



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

| | | | |
|--------------------|-------------------|--------------|------|
| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
| सिटी पल्स | 11.11.2020 | — | -- |

एचएयू के वैज्ञानिकों ने ज्वार की मीठी, अधिक प्रोटीन व पाचनशीलता वाली किस्म सीएसवी44 एफ विकसित की

तामनलाङ्घ मह
 सिटी पल्स न्यूज़, हिमाचल प्रदेश की विधी वर्तन सिंह द्वारा लिखा गया विश्वविद्यालय के कृपि वैज्ञानिकों ने ज्ञात कोई नई व उत्तम विद्युतीय सीपरियर 44 एक विकसित कर एक और उत्तमतम् को विश्वविद्यालय के नाम दिया है। इनका इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुभवी एवं अचूक प्रबल विभाग के बाहर अनुभाव द्वारा विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इन किस्मों को भारत विदेश के कुछ एवं सदायोगी विद्यालयों के पल्स नामक, अधिकारीय एवं अमेरिकन कॉलेज एवं समिति द्वारा उत्तम दिल्ली में आवश्यक 4840 बड़ा भवन में अधिकारित व जारी कर दिया गया है। बैठक को अध्यक्षाता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के प्रसाद विद्यालय के उप-महानिदेशक डॉ. डी. आर. रामन ने कोई भी। यहाँ कोई विकसित विद्युतीय ग्रन्थालय या सुन्दराकानक, महाराष्ट्र और तामनलाङ्घ के लिए विश्वविद्यालय को गई है। लालकिंड इन किस्म को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने प्रयोग की विकसित किया है।

मिशन अन्य किसीसे से 10 प्रतिशत तक अधिक विविधालयों के नियुक्ति भरने वाले हैं। इसके सहायता ने बताया कि योग्यताएँ 44 एफ किस्म में अन्य किसीसे की तुलना में प्रोटीन के प्रवर्गनितीय अधिक विविधालयों से पांच के द्वारा उदाहरण में विकसिती करती है। इस किस्म में मिशन 10 प्रतिशत से भी अधिक व स्थायी होने के कारण पशु इसको खाना अधिक पांदं होता है। इस किस्म के लिए प्रसिद्ध



तिसारा। ज्यार की नई जगत किसम सौपसबो 44 एक का फ़हल फ़ोदो। ज्यार की जगत किसम विकसित करने वाली दीम सदस्य।

किम्सी.एस.वी. 21 एक से 7.5 प्रतिशत व शी.एस.वी. 30 एक से 5.8 प्रतिशत अधिक हो जोरे की दौड़ाइयों होने के कारण यह नियमों को अधिक लाभ देता होगा। सिफारिश किए गए उत्तम खाद्य व सिंचाई प्रबन्धन के अनुसार यह किम्सी अधिक बढ़ावा देते हैं में सक्षम हो और इस लक्षणीय भूमि में भी उत्तमता जा सकता है। अधिक बढ़ावा व उत्तम हवा बदलने पर भी यह किम्सी गिरती रहती है। यह नियमों के प्राप्त लाभों का तत्त्व भूति है। योग्यता 44 एवं विद्युत विद्युतीकरण के लिए प्रयोगी

वे वर्ष इनमें पार पर लाने वाले रोग भी नहीं
लाए। विश्वासियों के अनुसार चारा दूधबद्ध,
प्रतिविहारी एवं रोग प्रतिविहारीकान्‌कों की टॉप
पर उनका विकास है। इन किसिम को ही
जाक उनका विकास है। इन किसिम को ही
जो आवश्यक पैदावार 407 किलोटन प्रति
दिन बढ़ावा देता है। जाक उनका अब वर्तम
ानी मिली सीधी सीधी 21 एक और सीधीसीधी 30
एक से कमसे: 7.5 प्रतिवर्षीय व 5.8 प्रतिवर्षीय
आवश्यक है। इन किसिम को सूखे वाले को
जाक उनका पैदावार 407 किलोटन प्रति होकरटे
जाओ। जो किसिम के विकास को विकास किसी से
अधिक है।

प्रेसल
इस्ट किस्म को विकसित करने वाली एम डिव्यू अनुवांशिकीय एवं पौधा कार्बन आणि वायरल के अंतर्गत दो वर्ष, एस. फोगाट ने बताया कि हालांकि इस किस्म का एप्पल्यू में ही किक्सिंग किया जाता है, लेकिन कमटी द्वारा इसकी अभिवृद्धि और विविधता को ज्ञान में रखते हुए अभी देश के विविध संस्थानों (उत्तराखण्ड, महाराष्ट्र और गुजरात) में ही चारों को उनमें विद्यार्थी विभागों द्वारा विकास किया गया। इस किस्म को दूसरे विभिन्न देशों में परिवहन के तौर पर विकास किया जाता है।

अब तक ज्ञान की प्राप्ति किसे विवरित कर चुका है काशुण् - कल्पती

विवरितकार के गुणात् दो तथा उन्हें लोकी
देखतीयो द्वारा उत्तरविधि एवं वाक्यादि द्वारा अभिभृत
होती है जिसका प्रयोग सामाजिक रूप से अवधारणा
का उत्तरवेदी बाधाया जाता है। उत्तरवेदी वाक्यों में भी
विवरितकार के धारा ज्ञानकार के देखतीयो
द्वारा विवरितकार की व्याख्या से लेकर अब तक
एक विवरितकार की ज्ञानी होती है, जो उत्तर
आप से ज्ञान देती है वही विवरितकार है।

इन दौड़ानिकों की मेहनत लाई गयी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|--------------------|------------|--------------|------|
| उत्तम हिन्दू | 11.11.2020 | -- | -- |

कृषि वैज्ञानिकों ने की पशु चारे की ज्वार की नई किस्म विकसित

हिसार/प्रब्रीम कुमार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार के कृषि वैज्ञानिकों ने पशुओं के चारे की फसल ज्वार की नई व उन्नत किस्म 'सीएसवी 44 एफ' विकसित कर विश्वविद्यालय के नाम एक और उपलब्धि दर्ज करवा दी है। ज्वार की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुबांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुपोदन कानून उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित 8वीं बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया। बैठक की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के फसल विज्ञान के उप-महानिदेशक डॉ. टी.आर.

शर्मा ने की थी। ज्वार की यह किस्म दक्षिणी राज्यों मुख्यतः कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए सिफारिश की गई है। हालांकि इस

'सीएसवी 44 एफ'
विकसित होने से
विश्वविद्यालय के नाम
एक और उपलब्धि दर्ज

किस्म को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एचएग्यू में ही विकसित किया है। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि 'सीएसवी 44 एफ' किस्म में अन्य किस्मों की तुलना में प्रोटीन व पचनशीलता अधिक है, जिसकी वजह से यह पशु के दुध उत्पादन में वृद्धि करती है। इस किस्म में मिठास 10 प्रतिशत से

भी अधिक व स्वादिष्ट होने के कारण पशु इसे खाना काफी पसंद करते हैं। इस किस्म में हरे चारे के लिए प्रसिद्ध किस्म 'सीएसवी 21 एफ' से 7.5 प्रतिशत व 'सीएसवी 30 एफ' से 5.8 प्रतिशत अधिक हरे चारे की पैदवार होने के कारण किसानों को अधिक मुनाफा भी होगा। विश्वविद्यालय के आनुबांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. ए.के. छावड़ा ने बताया कि 'सीएसवी 44 एफ' किस्म को विकसित करने में इस विभाग के चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. पर्मी कुमारी, डॉ. सलवान आर्य, डॉ. एस.के. पाहुजा, डॉ. एन.के. उकराल एवं डॉ. डी.एस. फोगट की टीम की महत्वत रंग लाइ है। इसके अलावा डॉ. सत्याल, डॉ. जयती टोकस, डॉ. हरीश कुमार, डॉ. विनोद मलिक एवं डॉ. सरिता देवी का भी बिशेष सहयोग रहा है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|--------------------|------------|--------------|------|
| पाठक पक्ष | 11.11.2020 | -- | -- |

तमिलनाडू, महाराष्ट्र व कर्नाटक में भी बोई जाएगी एचएयू से विकसित ज्वार की नई किस्म सीएसवी 44 एफ

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 11 नवम्बर : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने ज्वार की नई व उन्नत किस्म सीएसवी 44 एफ विकसित कर एक ओर उपलब्धि को विश्वविद्यालय के नाम किया है। ज्वार की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित 84वीं बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया



है। बैठक की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के फसल विज्ञान के उप-महानिदेशक डॉ. टी.आर. शर्मा ने की थी। ज्वार की यह किस्म दक्षिणी राज्यों मुख्यतः कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए सिफारिश की गई है। हालांकि इस किस्म को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एचएयू में ही विकसित किया है। विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. ए.के. छाबड़ा ने बताया कि सीएसवी 44 एफ किस्म को विकसित करने में इस विभाग के

चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. पम्मी कुमारी, डॉ. सत्यवान आर्य, डॉ. एस.के. पाहुजा, डॉ. एन.के. ठकराल एवं डॉ. डी.एस. फोगाट की टीम की मेहनत रंग लाई है। इसके अलावा डॉ. सतपाल, डॉ. जयंती टोकस, डॉ. हरीश कुमार, डॉ. विनोद मलिक एवं डॉ. सरिता देवी का भी विशेष सहयोग रहा है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कृषि वैज्ञानिकों द्वारा इस उपलब्धि पर बधाई दी और भविष्य में भी निरंतर प्रयासरत रहने का आहवान किया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

दिनांक 12.11.2020 पृष्ठ संख्या.....4 कॉलम.....1-4

सलाह • गेहूं की अधिक पैदावार के लिए खुद भी बीज तैयार कर सकते हैं किसान अधिक पैदावार के लिए गेहूं की डब्ल्यूएच 1184 किस्म करें इस्तेमाल, प्रति एकड़ 25 विंटल तक पाएं पैदावार

• एचएयू के वैज्ञानिक बोले- बीज तैयार करते समय विशेष सावधानी रखें किसान

महबूब अली | हिसार

एचएयू के अनुवांशिक एवं पौध प्रजनन विभाग के वैज्ञानिकों ने गेहूं की डब्ल्यूएच 1184 किस्म विकसित की है, जिसमें प्रति एकड़ जहं 25 विंटल तक पैदावार ली जा सकती। वहीं इस वैरायटी में बीमारी नहीं होगी। यहीं नहीं यह प्रोटीन से भी भरपूर है। इसके अलावा एचएयू के वैज्ञानिक किसानों को गेहूं की दूसरी वैरायटी एचडी 3086 और डब्ल्यूएच 1105 भी उगाने की अपील कर रहे हैं। इन दोनों किस्मों में बीमारी नाममात्र ही लग पाती है।

एचएयू के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह व डॉ. विक्रम सिंह ने बताया कि गेहूं की ज्यादा पैदावार लेने के लिए शुद्ध बीज का होना बहुत जरूरी है, लेकिन किसानों को या तो शुद्ध बीज प्राप्त नहीं होता या इसके लिए बहुत समय व धन खर्च करना पड़ता है। इन परेशानियों से बचने के लिए किसान एक बार किसी प्रमाणित संस्था जैसे चौथरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, राज्य बीज विकास निगम व राष्ट्रीय बीज निगम आदि से शुद्ध बीज खरीद कर उसी से अपने खेत में खुद बीज तैयार करके उसकी शुद्धता को कई सालों तक कायम रख सकते हैं।

किसान कुछ खास बातों का रखें ध्यान

खेत का चुनाव: शुद्ध बीज तैयार करने के लिए ऐसा खेत चुनना चाहिए जिसकी जमीन उपजाऊ हो व सिंचाई की समुचित व्यवस्था हो। उस खेत में दूसरी फसलों के पौधे व खरपतवार न हो।
बीज उपचार: बीज यदि पहले से उपचारित नहीं हों तो 2 ग्रा. बीटावैक्स प्रति किग्रा. बीज की दर से मिलाएं ताकि खुली कंगियारी बीमारी की रोकथाम हो सके।



बिजाई का तरीका: शुद्ध बीज तैयार करने के लिए इसकी बीजाई समय पर व करतेरों में करनी चाहिए जिससे गैर पौधे निकलने का काम आसानी से किया जा सके। खेत में खाद-पानी किस्म के अनुसार दिया जाए व फसल के गिरने का ध्यान रखें।

फसल की छंटाई: शुद्ध बीज तैयार करने के लिए छंटाई महत्वपूर्ण है। शुद्ध बीज वाली फसल में किसी अन्य किस्म का पौधा वा खरपतवार हो तो उसको निकाल देना चाहिए। खुली कंगियारी से प्रभावित पौधों को थैले से ढक कर सावधानी पूर्वक निकाल कर खेत से दूर मिट्टी में दबा दें।

कटाई व मढ़ाई: अगर खेत आसपास अन्य किस्मों की बिजाई नहीं की गई है तो खेत को काट लेना चाहिए, यदि नहीं की गई तो खेत के उस ओर से 3 मी. चौड़ी पट्टी फसल काट कर अलग से साफ मरीन से मढ़ाई कर लेनी चाहिए।

बीज रखाव: इस बीज को ज्ञाने से छान तें ताकि खरपतवारों के बीज व छोटे सिकुड़े हुए दाने नीचे रह जाएं। मोटे दानों में अगर कोई दूसरी तरह का दाना दिखाई दे तो उसको भी निकाल देना चाहिए।

नमीयुवत और भूरभूती मिट्टी में की करें गेहूं की बिजाई

राकेश कुमार | ग्रामीण बीरबल

गेहूं हरियाणा की एक मुख्य आनंद की फसल है। इसकी बिजाई के लिए विभिन्न कारकों में भूमि की तैयारी एवं खाद का प्रबंधन एक मुख्य कारक है जो गेहूं की फसल को बढ़ाता है। अपनी तक कुछ दिनों में जिन किसानों ने गेहूं की बिजाई करनी है इसके लिए विस्तार से जानकारी देते हुए पूर्व प्रधान मूदा वैज्ञानिक डॉ. विजय ने कहा कि गेहूं की अच्छी भूमि पूर्वक फसल लेने के लिए खेत में अच्छी नमी और मिट्टी भूरभूती होनी चाहिए। सिंचित भूमियों में पहली जुताई मिट्टी पैलट हल से करके बाद में तीन-चार जुताई हैरों से करें और बाद में सुहागा लगाएं। भूमि आगर समतल नहीं है तो लेंडलैवलर से भूमि का समतल करें।

खाद व उर्जाकों का प्रयोग: अगर गेहूं की देसी किस्म सिंचित इलाकों में लगाई है तो सामान्य तौर पर इसके लिए 24 किलो नाइट्रोजन 52 किलो यूरिया, 12 किलो फास्फोरस 75 किलो सिंगल सुपर फास्फोरट व 6 किलो पोटाश (10 किलो मुरेट आफ पोटाश, 10 किलो जिंक सल्फेट प्रति एकड़ की सिफारिश है। पोटाश की मात्रा 12 किलो, 20 किलो मुरेट आफ पोटाश का प्रयोग करें।